

1961C Is Man a Meat Eater?

Kya Mans Manushya ka swabhavik Ahaar hai? Also about role of the government

(In Sanmati Sandesh Dec 1961, reprinted in Parshva Darshan May 1978 and Anekant)

क्या मांस मनुष्य का स्वाभाविक आहार है ।

• छीरालाल शास्त्री

मांस खाना मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है, इस बात की परीक्षा प्रकृति देवी के सच्चे उपासक और तदनुकूल कार्य करने वाले पशुओं से सहज में हो जाती है। पशुओं की दो जातियाँ हैं—एक मांसाहारी दूसरी शाकाहारी (घास खाने वाली) मांसाहारी पशुओं के नाबूत पने होते हैं जैसे कुत्ता, बिल्ली सिंह आदि हिंस्र प्राणियों के होते हैं, शाकाहारी पशुओं के नाबूत पने या नुकुलें नहीं होते जैसे की गाय, हाथी, भैंस, ऊँट आदि के मांसाहारी पशुओं के जबड़े लम्बे होते हैं पर शाकाहारियों के गोल। गाय और कुत्ते के जबड़े देखने से यह भेद साफ साफ नजर आयेगा। मांसाहारी पशु पानी को जीभ से चप चप कर पीते हैं किन्तु शाकाहारी प्राणी होठ टेक कर पीते हैं। गाय, भैंस, बन्दर और सिंह खान, बिल्ली आदि को पानी पीते हुये देख कर यह भेद सहज में ही श्रात हो जाता है। परन्तु मनुष्यों में पशुओं के समान दो प्रकार की जातियाँ दृष्टिगोचर नहीं होती।

यह एक आश्चर्य की बात है कि अपने को बन्दर की औलाद मानने वाला पश्चिमी संसार बन्दरों का खाना पीना छोड़कर कुत्ते-बिल्लियों का खाना कैसे खाने लगा। यह तो विकास नहीं उल्टा ह्रास हुआ। जब ये पश्चिमी वैज्ञानिक आंत-दांत हड्डी आदि की समता देखकर मनुष्य को बन्दर तक की सत्ता कहते में नहीं चूकते तब फिर उसकी समता से वे स्वयं शुद्ध शाकाहारी क्यों नहीं बने रहते, यह सबसुख विचार-पीस है। यथार्थ बात तो यह है कि मनुष्य रसना (जीभ) के स्वादवश मांस मक्षण जैसे अनर्पकारी पाप में प्रवृत्त हुआ और होता जा रहा है, अन्यथा यह उसका स्वाभाविक भोजन नहीं है। क्योंकि मनुष्य के दाँतों की बनावट और उसके खान पान आदि का तरीका बिल्कुल शाकाहारी प्राणियों से मिलता है। इससे यह निर्विवाद सिद्ध है मांस मक्षण मनुष्य का

स्वाभाविक आहार नहीं है। दूसरी एक महत्वपूर्ण बात यह भी जानने के योग्य है कि खाने की चीजें दो तरह की होती हैं—एक आधी (जल से उत्पन्न होने वाली) दूसरी पेद्याबी (रज और वीर्य के संयोग से पैदा होने वाली) आधी पदार्थ वे हैं जो बारिश या पानी की सिंचाई से पैदा होते हैं। जैसे गेहूँ चना मटर आदि अनाज और अंगूर अनार शैब आदि फल तथा शाक माजी आदि। पेद्याबी चीजों में मनुष्य और पशु पक्षियों की गणना की जाती है, क्योंकि समस्त पशु पक्षी आदि पेद्याब से ही पैदा होते हैं। और इन्हीं पेद्याबी पशु आदि के भ्रात से मांस पैदा होता है। इन दोनों प्रकार की चीजों में पेद्याबी चीज गन्दी अपवित्र एवं अमल है और आधी चीजें, सुन्दर, पवित्र अतः एवं मस्य है।

मांस खाने वाले लोग समझते हैं कि मांस खाने से शरीर में ताकत बढ़ती है, किन्तु यह धारणा नितान्त भ्रमपूर्ण है। ताकत बढ़ाने के लिये मांस में ५३-५५ डिग्री अंश है, तब गेहूँ में ९८ चने में १२४ मूग में ११८, भिण्डी में १२१ और नरियल में १६५ डिग्री तापक अंश है। ताकत मांसखोर शेर, चीते, बाघ आदि की अपेक्षा घास-भोगी हाथी, घोड़े बैल आदि में बहुत होती है। बोझा बोना, हल खींचना आदि ताकत के जितने भारी काम घोड़े बैल आदि कर सकते हैं, उतना काम शेर आदि नहीं कर सकते। यह बात मनुष्यों में है। जो मनुष्य पश्चिम और म्यायाम करने वाले हैं वे यदि अन्न मेवा आदि खाते हैं तो मांस मसियों की अपेक्षा अधिक ताकत सम्पन्न होते हैं।

मानसिक बल तो मांस खाने से उल्टा कमजोर होता है। संसार में आज कल हज़म जहाज़, विमान टेलीफोन, ग्रामोफोन, आदि जिन अविष्कारों को देखकर मनुष्य की बुद्धि का नाप तोल करते हैं, उन चीजों के आविष्कारक मांस मसों नहीं अपितु फलाहारी और शाक भोगी थे।

किसी छोटे बच्चे के सामने यदि मांस का टुकड़ा और सेब सलतरा आदि कोई एक फल डाला जाय तो बच्चा स्वभावतः अपने आप फल को ही उठायेगा, और मांस को छुट्टा भी नहीं।

इसके सिवाय मांस चाहे कच्चा हो, या पकाया हुआ गोला हो या सूखा, उसमें अस्वस्थ सुधम और जिनका कि रूप रंग मांस के ही सदृश होता है हमेशा पेटा होते और मरते रहते हैं। इस कारण मांस खाने से बहुत से ऐस रोग पैदा होते हैं, जो कि अन्न भोजी या शाकाहारी मनुष्यों को नहीं होते हैं। कैंसर या नामूर का अति भयानक रोग प्रायः मांस भक्षी मनुष्यों को ही होता है।

इस प्रकार यदि धर्म पवित्रता, शारीरिक शक्ति विमापी साकल, स्वभाव आदि किसी भी दृष्टि में विचार कर देख लीजिये मांस खाना हर तरह से हानिकारक और अन्न फल मेरा भी रूप आदि पदार्थों का खाना लाभप्रद सिद्ध होता है।

स्वास्थ्य-वृद्धि के लिये शाक भाजी का महत्व

भारत शाकाहारी देश है। शरीर रचना के निरीक्षण से बोध होता है कि मानव शाकाहारी है।

शरीर और मन पर भोजन का बड़ा प्रभाव पड़ता है। मांस आदि अहार प्रोटीन, स्टार्च आदि द्रव्य से भरपूर होता है। वे द्रव्य शरीर में गुणमत्ता से न पचने के कारण शरीर में मूरिक ऐसिड जैसे विष पैदा करते हैं। शरीर को विजातीय विष दुर्बल बनाते हैं और शरीर यंत्र के कोमलांग पर अनुचित दबाव से उनके नियमित कार्य में विघ्नता उत्पन्न हो जाती है। जो अहार सजीब और बेसन युक्त होता है यही शरीर में जीवन शक्ति और उत्साह पैदा करता है। इस दृष्टि से शाक भाजी ही मनुष्य का नैसर्गिक अहार बन सकती है।

शरीर को स्वस्थ और पुष्ट रखने के लिये शरीर में पौष्टिक भाग और पाचन भाग खड़ा होना आवश्यक है। खटाई की अभिवृद्धि से बीमारियाँ पैदा होती हैं। शरीर को शारमय रखने के लिए शाक भाजी ही अहार में महत्व का स्थान रखती है। रोग

की स्थिति में शाकभाजी खाओ इस युद्ध का उष्णारण आयुर्निक डाक्टर लोग भी करने लगे हैं। शाकभाजी प्रकृति द्वारा मिली हुई अनमोल मेंट है। उनका सदुपयोग आरोग्य शक्ति देता है। इतना ही नहीं उसके सेवन से हम अनेक रोगों को मिटा सकते हैं।

शाकाहार एक पौष्टिक खुराक है—

भारतवासी प्रारम्भ से ही शाकाहारी रहे हैं। बीच के समय में अनाथ लोगों के सम्पर्क से अल्प कुछ लोगों ने मांस सेवन प्रारम्भ कर दिया पर कुछ लोगों को हमारे यहाँ पुष्पा को दृष्टि से ही देखे जाने रहे हैं। विदेशों में जहाँ पर धीमे की अधिकता से अन्न उत्पन्न नहीं होता था लोग मांस भोजी रहे हैं।

और निरन्तर मांस सेवन करने से उनके हृदय में यह धारणा घर कर गई कि शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिये मांस खाना अनिवार्य है। पर उनकी यह धारणा कितनी भ्रमपूर्ण है, इसे एक बच्ची महिला के ही शब्दों में सुनिये—

मिस क्राइजे एक जर्मनी महिला है वे लोग बने से भी अधिक समय से जैन धर्म को धारण करने भारत में रहे रहीं हैं। जब आपने जर्मनी से भारत आने का विचार अपने कुटुम्बजनों और मित्रों से प्रकृत किया, तो वे लोग बोले—तुम पास भूत खाने वाले देश में जाकर भूलों मर जाओगी। अन्न तो पास भूत है उसे खाकर मनुष्य कैसे जिन्दा रह सकता है जो उससे शरीर को क्या ताकत मिल सकती है। इत्यादि मिस क्राइजे अपने निरचय पर दृढ़ रहीं और उन्होंने भारत आने का संकल्प नहीं छोड़ा। भारत आने के बाद जब उन्हें यहाँ के पृत तेल पक्व मैदा, बेसन आदि के बने पकवानों का परिचय प्राप्त हुआ तो उन्होंने मांस खाने का सदा के लिये परित्याग कर दिया। वे मुझे बतलाती रहीं हैं कि अन्न निम्न मातृतीय पकवान कितने मिष्ट पौष्टिक होते हैं इन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती हूँ। अपने देवगालों को मैंने पत्तों में लिखा है कि अन्न भोजन के प्रति यह बालों की धारणा कितनी भ्रमपूर्ण है।

भोजन के तीन प्रकार

हमारे महर्षियों के भोजन के तीन प्रकार बतलाये हैं—तत्त्विक, राजसिक और तामसिक। जिस भोजन के करने से मन में दया, क्षमा, विवेक आदि सात्विक भावों का उदय हो, शरीर में स्फूर्ति और मन में हृद्य का संचार हो वह सात्विक भोजन है। जैसे दाल, चावल, गेहूँ, दूध, ताजे फल, सूखी मेवा और ताजी शाक भाजी आदि जिस भोजन के करने पर मन में रोष अहंकार आदि राजसिक भावों का उदय हो, किसी पवित्र कार्य के करने के लिये मन में उमंग, उत्साह न हो प्रस्तुत मान बड़ाई और प्रसिद्धा प्राप्त करने के लिये मन में उफान उठे वह राजसिक भोजन है। अधिक खटाई ममक और मिर्चों वाले पेट परदायं यही बड़े पकोड़े और नमकीन चाट वरीरु राजसिक भोजन समझना चाहिये। जिस भोजन के करने से मन में काम क्रोधादि विकार उत्पन्न हों, पतने लिखने में चित्त न लगे, हिंसा करने बूठ बोलने और पर स्त्री सेवन करने के भाव जन्म हो वह तामसिक भोजन है। मछ, मांस और परिस्टि अहार के सेवन को तामसिक भोजन कहा गया है।

तामसिक भोजन करने वाला व्यक्ति जरासा निमित्त मिलने पर एकदम उरोजित हो आपे से बाहर हो जाता है और एक बार उरोजित हो जाने पर फिर उसे अपने आप काबू पाना असम्भव हो जाता है। तामसिक भोजन करने वाले की प्रवृत्ति हमेशा दूसरों को मारने पीटने और नीचा दिखाने की रहती है। वह दूसरे के न्यायोचित अधिकारों को भी कुचल करके अपने अन्यायपूर्ण कार्यों को महत्व की दृष्टि से देखेगा। तामसिक भोजी अत्यन्त स्वार्थी और खूद गर्ज होते हैं।

राजसिक भोजन करने वाले व्यक्ति की मनो-वृत्ति यद्यपि सामसिक भोजी की उपेक्षा बहुत कुछ अच्छी होती है, पर फिर भी उसे जरा सी बातों पर विद्विधिद्विहाट उत्पन्न होती रहती है, चित्त अत्यन्त बंचल और मन उठाबला रहता है अपनी प्रशंसा और पराई निन्दा को और उसका अधिक झुकाव रहता है यह यवाः प्राप्ति के लिये रण में मरण से भी नहीं डरता है।

सात्विक भोजी की मनोवृत्ति सदा सात्विक रहती है। इतके हृदय में प्राणिमात्र के प्रति मैत्री-

भावना होती, पुणीजनों को देखकर उसके भीतर प्रमोद का पारावार उमड़ पड़ेगा और दीन दुखी जनों के उदार करने के लिये वह सदा उद्यत रहेगा और रिश में दया और करुणा की सरिता प्रमापित रहेगी उसका चित्त स्थिर और प्रसन्न रहेगा। ज्ञानो-पाजने के लिये सदा उद्यत रहेगा।

उक्त विवेचन से यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि मनुष्य के भीतर मानवीय और वैदिक गुणों की प्राप्ति और उनके विकास के लिए सात्विक भोजन करने की अत्यन्त आवश्यकता है तामसिक भोजन से तो पाषाणिक और नारकीय प्रवृत्तियाँ ही जागृत होती हैं यदि हमें नारकी और पुणु नहीं बनाना है, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम तामसिक भोजन का सदा के लिये परित्याग कर दें।

अहिंसा और हिंसा

अहिंसा जीवन है, तो हिंसा मरण है। अहिंसा शान्ति की उत्पायिका है। अहिंसा उन्नति के सिंघर पर ले जाती है तो हिंसा अवन्ति पूर्व में ढकेलती है अहिंसा स्वर्ग और मोक्ष का द्वार है तो हिंसा नरक और निन्द का द्वार है। अहिंसा नदधार है, तो हिंसा बुराचार है अहिंसा प्रेम का प्रसार करती है, तो हिंसा डंढा को फैलाती है। अहिंसा धनुषों को मित्र बनाती है तो हिंसा मित्रों को धनु बनवाती है। अहिंसा चिरागियों के विरोध को धान्य कर परस्पर सुलह कराती है। तो हिंसा स्नेही जनों में मो कलह कराती है। अहिंसा सर्व प्रकार के सुखों को जन्म देती है तो हिंसा सभी दुखों को जन्म देती है। अहिंसा धर्म को जीवित रखती है, तो हिंसा धर्म का नाश करती है। अहिंसा गंगा की पीतल धारा है, तो हिंसा अग्नि की प्रचण्ड ज्वाला है। अहिंसा राक्षस है, तो हिंसा भक्षक है। अहिंसा शारदी पुष्पिमा है तो हिंसा भयानकी अमावस्या। अहिंसा भगवती देवी है, तो हिंसा विकराल राक्षसी। अहिंसा मय दुख मोचनी है, तो हिंसा सर्व सुख शोषिणी है। अहिंसा से मंडट निर्जर और मोक्ष होता है, तो हिंसा से आव्यव, बंध और संसार रोता है। ऐसा जानकर आराम द्विर्निषियों को हिंसा राक्षसी को छोड़कर अहिंसा भगवती का आश्रय लेना चाहिए।

सरकार द्वारा मांस-भक्षणका प्रचार

(पं० हीरालाल सिद्धान्त-शास्त्री)

'अहिंसा' नामसे हिंसाका साधारण मर्म शीर्षक एक लेख 'अहिंसा' पत्रके 1 जनवरी 29 के संकलमें प्रकाशित हुआ है, उसका निम्न संक्षिप्त उपयोगी होनेसे हम यहाँ बताने साधारण से रहे हैं। पाठक मध्य काल उभे पढ़कर ही न रह जायें, बल्कि वे प्रकाशकों के मुनासिब और अपने आत्म-नासिका साक्षात्करण दिने पर दिन बढ़ती हुई इस महाहिंसाके विरुद्ध अपनाकर सरकारके इस कुकृत्यकी भार-र विरुद्ध बने नये कर्माहंगामे जोड़ने और मांस-भक्षण प्रथाको रोकनेके लिए अपनी एवं शक्ति लगायें।

"जिस भारतमें 2000 वर्षे पहले मांसकी एक भी टुकड़ा नहीं थी, उस भारतके इस भी वर्षके स्वतंत्रता-संग्राममें मांसकी टुकड़ानों, कर्माहंगामों और मांस-भक्षणको पर्याप्त नही खाधिक प्रोत्साहन मिला है। अहिंसाका नारा लगानेवाली वर्तमान सरकारके आच-विभागने अहिंसी भाषामें एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें मांस-भक्षणके पक्षमें अनेक युक्तियों देकर मांस-भक्षणको विषय माना ही नहीं, किन्तु आश्चर्यक तथा उपयोगी बतलाया गया है। जब कि विद्वानोंमें मांसहारीकी प्रवृत्ति कम होती तब कर शाकाहारकी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है और संसारके बड़े-बड़े शास्त्र और विशेष मांसका आहार मानवीय प्रवृत्तिके विरुद्ध बतलाते हैं। जिन उपद्रवोंको विदेशी विद्वानों लोग छोड़ते जा रहे हैं, वेद कि भारतीय उपद्रव करते जा रहे हैं।"

"यह और भी अधिक दुःखकी बात है कि जिस भारतमें आच-विभागसे मांस-भक्षणको प्रोत्साहन देने वाली यह पुस्तक निकली है, उसके सर्वे सर्वो 'जैन' और महासुभाष हैं। जैनधर्ममें मांस-भक्षण को क्या, मांस-व्यर्थको भी और पाप और महादुःखप्राप्त माना गया है। भोजनके समय मांसका नाम लेना भी जहाँ अस्वभाविक कारण बन जाता है, वहाँ मांस-भक्षणको प्रोत्साहन दिया जाना बहुत ही अज्ञानजनक बात है।"

मांस-भक्षणको प्रोत्साहन देने वाली सरकारकी यह आज्ञा होना चाहिये कि अन्तर्गत अन्धधर्म भ्रमों मरने वालीकी शुभमूर्ति मिलनेके लिये वह जिस दयालुता या कर्तव्य-कारणसे प्रेरित होकर कर्माहंगामे खुलवा रही है और लोगोंको मुर्गी या मछली पालनेके लिए महादुःख दे देकर जोर-जोरसे प्रचार कर रही है, वह उसका एकदम क्रूरतापूर्ण धर्म-धर्म है। जो परिचयी देश नास्तिकवादी हैं,

लोक-परकोक और पुण्य-पाप कुछ नहीं मानते हैं, उनके क्रूर कार्योंका अन्धधर्मपरक हमारी यह भारत सरकार कर रही है, जिसका जन-जन्म आत्मिक एवं परलोकवादी है और पुण्य-पापको मानता है। जीवधान करने वालोंको मत होना चाहिये कि जिस प्रकार तुम्हें अपने प्राण प्यारे हैं, उसी प्रकार प्राणिक प्राणियोंको भी अपने प्राण प्यारे हैं। जिस प्रकार तुम्हें जरा-सा क्रूरता चुभने पर कष्ट होता है, उसी प्रकार उनमें भी कष्ट होता है, फिर तुम क्यों उन जीव-जीन मूक प्राणियों पर छुरी चलाकर अपनी निर्दयताका परिचय देते हो! ५० महाधर्मने अपने आच उपद्रवमें यही कहा था—

सर्वेषु जीवा वि शृणुति जीविषुं गु मरिचिज्जटं ।
तन्मा प्राणिवहं धीरं समसा परिवचज्यति यं ॥

—आचारंग सूत्र
मांसको खानेवाले समझे होंगे कि जानवरको मारने वाले खटीक या कसाई आदिको जीववात्सल्य पाप लगना होगा, खाते वालेको क्या दोष है? परन्तु उनका यह समझ बिलकुल अज्ञानसे भरी हुई है। इसका कारण यह है कि कसाई यंत्रोद्धार को भी जानवरका घात करते हैं, वे उसे खाने वालेके निमित्त ही मारते हैं। यदि खाने वाले लोग मांस खाना छोड़ दें, तो कसाई खानोंमें प्रतिदिन जो लाखों प्राणों को मारते हैं, उनका काटा जाना भी बन्द हो जाये। शास्त्रकारोंने तो यहाँ एक बतलाया है कि जो स्वयं जीवघात न करके दूसरोंसे कराता है, जीवघात करने वालीकी अनुमोदना, प्रशंसा और सराहना करता है, वह भी जीवघात करने वालेके समर ही पापी है। जिस प्रकार मांसका खानेवाला पापका भागी है, उसी प्रकार मांसका पकाने वाला, खानेवाला, परोसने वाला और बँचने वाला, भी पापका भागी होता है। बहुत बचपनमें हमने एक नजमें सुना था—

'हृत्पारे आठ कसाई, महाराज मनु बतलाते'
धर्मनू मनु महाराजने आठ प्रकारके कसाई बतलाये हैं। मनुस्मृतिके बतलाये गये वे आठ कसाई इस प्रकार हैं—
अनुमन्ता विशासिता विद्वन्ता क्रय-विक्रयी ।
संस्कारा चोपहृता च स्वादकभ्रैति पातकाः ॥
धर्मनू-पशुघात करने या मांस खानेकी अनुमति देने वाला, पशुघात करने वाला, मांसके टुकड़े करने वाला, मांसको बँचने वाला, मांसका खरीदने वाला, मांसका पकाने वाला, मांसका परोसनेवाला और मांसका खाने वाला, ये आठ प्रकारके कसाई होते हैं।

मनुस्मृतिके वक्तव्यमें स्पष्ट है कि मांस-भक्षण करने वालेके समान उसका प्रचार, व्यापार और तैयार करने वाले

मनुस्मृतिके वक्तव्यमें स्पष्ट है कि मांस-भक्षण करने वालेके समान उसका प्रचार, व्यापार और तैयार करने वाले

अपनेको धार्मिक करने वाली हमारी भारत सरकार इस महाहिंसाके महापापका इस प्रकार सुला प्रचार कर रही है, यह अत्यन्त दुःखकी बात है। धर्मशास्त्र भारतके नेताओं द्वारा इस महा हिंसाका तीव्र विरोध होना अत्यावश्यक है। मनुस्मृतिके भी यही बात कही है—

नाहुत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुपयुते क्वचित् ।
न च प्राणिवधः स्वयंस्वस्वमात्मनां विवर्जयेत् ॥

अर्थात् प्राणियोंकी हिंसा किये बिना मांस पैदा नहीं होगा, और न प्राणियोंका वध करना स्वयं देने वाला है, इसलिए मांस नहीं खाना चाहिये।

मांसको खानेवाले समझे होंगे कि जानवरको मारने वाले खटीक या कसाई आदिको जीववात्सल्य पाप लगना होगा, खाते वालेको क्या दोष है? परन्तु उनका यह समझ बिलकुल अज्ञानसे भरी हुई है। इसका कारण यह है कि कसाई यंत्रोद्धार को भी जानवरका घात करते हैं, वे उसे खाने वालेके निमित्त ही मारते हैं। यदि खाने वाले लोग मांस खाना छोड़ दें, तो कसाई खानोंमें प्रतिदिन जो लाखों प्राणों को मारते हैं, उनका काटा जाना भी बन्द हो जाये। शास्त्रकारोंने तो यहाँ एक बतलाया है कि जो स्वयं जीवघात न करके दूसरोंसे कराता है, जीवघात करने वालीकी अनुमोदना, प्रशंसा और सराहना करता है, वह भी जीवघात करने वालेके समर ही पापी है। जिस प्रकार मांसका खानेवाला पापका भागी है, उसी प्रकार मांसका पकाने वाला, खानेवाला, परोसने वाला और बँचने वाला, भी पापका भागी होता है। बहुत बचपनमें हमने एक नजमें सुना था—

'हृत्पारे आठ कसाई, महाराज मनु बतलाते'
धर्मनू मनु महाराजने आठ प्रकारके कसाई बतलाये हैं। मनुस्मृतिके बतलाये गये वे आठ कसाई इस प्रकार हैं—
अनुमन्ता विशासिता विद्वन्ता क्रय-विक्रयी ।
संस्कारा चोपहृता च स्वादकभ्रैति पातकाः ॥
धर्मनू-पशुघात करने या मांस खानेकी अनुमति देने वाला, पशुघात करने वाला, मांसके टुकड़े करने वाला, मांसको बँचने वाला, मांसका खरीदने वाला, मांसका पकाने वाला, मांसका परोसनेवाला और मांसका खाने वाला, ये आठ प्रकारके कसाई होते हैं।

मनुस्मृतिके वक्तव्यमें स्पष्ट है कि मांस-भक्षण करने वालेके समान उसका प्रचार, व्यापार और तैयार करने वाले

समा मनुष्य पापके भागी होते हैं, और इसीलिये मनु महाराजने उन्हें कसाई बतलाया है।

इसलिए भारत सरकार जो दिन पर दिन नये कर्माहंगामे खुलवा रही है, और लोगोंको मांस खानेके लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित कर रही है, वह तो जो कर्माहंगामे मांस-पापकी भाजन है ही, पर उस सरकारका जो विरोध नहीं करते, वे भी अनुमति-जनित दोषके भागी होते हैं।

भारतमें जब वैदिक धर्मका खोलवाला या और पञ्जाबी पशुपत्नीकी बलि दी जाती थी, उस समय भी किसी शासकने प्रोत्साहित प्रचार नहीं किया और न कसाईखाने ही मांस खानेका प्रचार नहीं किया और न कसाईखाने ही

मांस खानेका प्रचार नहीं किया और न कसाईखाने ही मांस खानेका प्रचार नहीं किया। अनेकों अनेके पूर्वाका सारा भारतीय इतिहास देख जायें, कहीं भी इस प्रकारकी कोई बात नहीं मिलेगी। स्वयं मांस-भक्षी होते हुए भी सुसलमानी बादशाहों की अनेक शासकोंने मांस-भक्षण करनेका ऐसा सुला प्रचार नहीं किया। प्रयुक्त इस बातके अनेक प्रमाण मिलते हैं कि अनेकी राजाओं और बादशाहोंने राजाशाहों और शाही दरबार निकाल करके प्राणियोंको न करनेकी घोषणाएँ की हैं, जो आज भी शिलालेखों एवं शासन-पत्रों के रूपमें उपलब्ध हैं। जन्मकालसे ही मांस-भक्षण करने वाले अनेकों सुसलमान-शासकोंने हमारे धर्म-गुरुओंके सदुपदेशसे स्वयं आत्मनके लिए मांस खानेका परित्याग किया है और अनेकों धार्मिक पत्रों पर किसी भी जीवके नहीं मारनेकी 'अमरती' घोषणाएँ कसाई हैं।

इन सबसे भी अधिक महान् दुःखकी बात यह है कि जो शिक्षा विभाग सदाचार और नैतिक नागरिक-प्रसारके लिए उपरदायी हैं, वह इस समय खूब दिल् खोच करके मांस-भक्षणका भारी प्रचार कर रहा है और मांस-भक्षणको उपयोगिता बनाकर धर्म-प्राय भारतीयोंकी गर्दी कोटिके पुस्तक प्रकाशनमें पानीकी तरह बहा रहा है। जिस भारतमें विदेशी और स्लेच्छ कहे जाने वाले लोग भी खानेके निमित्त मांस-उत्पादनके लिए पशुघातोंको घात कर लगेकी नालियां नहीं बहा सके, उस भारतमें आज उसीके और अपनेको अहिंसक करने वाले शासकोंके द्वारा प्रवृत्त अत्यन्त मूक पशुघातोंको काट-काटकर लगेकी नदियां बहा जा रही हैं !!! धर्मशास्त्र भारतके लिए इतने अधिक और दुःखको क्या बात हो सकती है !!!